SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सिंचाई और कृषक वर्ग की आर्थिक स्थिति एक ऐतिहासिक अवलोकन

लक्ष्मी कुमारी मुर्मू, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

लक्ष्मी कुमारी मुर्मू, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/12/2021
Revised on : -----
Accepted on : 16/12/2021
Plagiarism : 00% on 09/12/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Thursday, December 09, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 3001 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

flapkbZ vkSj d`"kd oxZ dh vkfFkZd fLFkfr ,d ,sfrgkfld voyksdu 'kks/kkFkhZ%& y{eh dqekjh eqewZ] fouksck Hkkos fo'ofo|ky;] gtkjhckx lkj%& ges'kk ls gh Hkkjrh; xzke leqnk; dh izeq[k fo'ks"krk gS fd og fofHkUu dkexkj lewg ds lkFk jgrs gSa vkSj gj leqg dk viuk mÙkjnkf;Ro vkSj dkZ djrk FkkA fofHkUu lkekftd lewgksa esa ls d`"kd ds ikl lds izeq[k dk;Z tksrus vkSj vukt mRiUu djus dk jgrk FkkA ftls xzke leqnk; ds yksxksa ds fy, Hkkstu miyC/k gksrk FkkA xzke leqnk; esa vU; yksx Hkh mRiknu esa lgk;d ds :i esa ;ksxnku nsrs

शोध सार

कृषि प्रधान देश भारत के किसान अनादि काल से मुख्यतः वर्षा पर ही सफल खेती के लिए निर्भर रहे हैं। साथ ही वे वैकल्पिक साधनों के द्वारा भी खेती की सिंचाई का कार्य करते थे। भारत के अनेक क्षेत्रों में सिंचाई प्रौद्योगिकी वास्तव में कृषि के लिए आवश्यक सुरक्षा प्रदान करते हैं। हमारे ऐतिहासिक स्त्रोतों में जल साधनों का जिक्र न मिलने के बावजूद सिंचाई के नतीजा निकालना संभव है। प्राचीन भारत में सिंचाई के लिए कुएँ, तालाब, और नहर आदि का प्रयोग होता रहा है। इन सब प्राकृतिक साधनों से पानी निकालने के प्रौद्यौगिकी का विकास धीरे–धीरे हुआ। सल्तनत काल में आर्थिक व्यवस्था का आधार कृषि था। भू–राजस्व राजकीय आय का प्रमुख स्त्रोत था तथा कृषि उत्पादन में कमी एवं वृद्धि भू–राजस्व संकलन व्यवस्था पर पूर्ण प्रभाव डालती थी। सल्तनत काल में सिंचाई व्यवस्था के विकास और विस्तार ने कृषि उत्पादन के स्वरूप पर गहरा प्रभाव डाला। किसानों द्वारा प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से राजस्व नकदी के रूप में भुगतान करने कि व्यवस्था ने जहाँ एक तरफ पूँजी के प्रसार में विस्तार किया, वहीं दूसरी ओर किसानों को व्यवसायिक फसल की उपयोगिता का आभास भी कराया। सल्तनतकाल में सिंचाई व्यवस्था के विस्तार के कारण अनाज उत्पादन में वृद्धि हुई, वहीं व्यवसायिक फसलों के उत्पादन का भी विस्तार हुआ। व्यवसायिक फसलों के उत्पादन ने व्यापार का विस्तार किया। व्यापारी उत्पादक और उपभोक्ता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। वे भिन्न–भिन्न क्षेत्र में कृषि उत्पादों और दस्तकरों और कारीगरों द्वारा बनायी गयी चीजों को एकत्रित करते हैं और एक क्षेत्र में उसको बेचते हैं। वे सिर्फ तैयार माल का ही व्यापार नहीं करते, बल्कि कच्चे माल का भी व्यापार करते थे। इस तरह अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

मुख्य शब्द

सिंचाई, व्यापार, विकास, कृषि, आर्थिक स्थिति.

परिचय

सल्तनत काल में आर्थिक व्यवस्था का आधार कृषि था। भू–राजस्व राजकीय आय का प्रमुख स्त्रोत था तथा कृषि उत्पादन में कमी एवं वृद्धि भू–राजस्व संकलन व्यवस्था पर पूर्ण प्रभाव डालती थी। सल्तनत काल में सिंचाई व्यवस्था के विकास और विस्तार ने कृषि उत्पादन के स्वरूप पर गहरा प्रभाव डाला। किसानों द्वारा प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से राजस्व नकदी के रूप में भुगतान करने कि व्यवस्था ने जहाँ एक तरफ पूँजी के प्रसार में विस्तार किया, वहीं दूसरी ओर किसानों को व्यवसायिक फसल की उपयोगिता का आभास भी कराया। सल्तनतकाल में सिंचाई व्यवस्था के विस्तार के कारण अनाज उत्पादन में वृद्धि हुई, वहीं व्यवसायिक फसलों के उत्पादन का भी विस्तार हुआ। व्यवसायिक फसलों के उत्पादन ने व्यापार का विस्तार किया। व्यापारिक उत्पादक और उपभोक्ता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी है। वे भिन्न–भिन्न क्षेत्र में कृषि उत्पादों और दस्तकरों और कारीगरों द्वारा बनायी गयी चीजों को एकत्रित करते हैं और एक क्षेत्र में उसको बेचते हैं। वे सिर्फ तैयार माल का ही व्यापार नहीं करते, बल्कि कच्चे माल का भी व्यापार करते थे। इस तरह अर्थव्यस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में द्वितीयक शोध सामग्री का उपयोग किया गया है, जिसे विभिन्न पुस्तकों, सरकारी आँकड़ों, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से संग्रहित किया गया है।

अवलोकन

दिल्ली सल्तनत की कृषि की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता किसानों द्वारा अत्यधिक संख्या में फसले उगाना था। संभवतः दक्षिण चीन के अतिरिक्त विश्व के किसी अन्य भाग में इतनी बड़ी संख्या में फसले नहीं उगाई जाती थी। इब्नबतूता भारत में फसलों की इतनी बढ़ी संख्या देख कर बहुत प्रभावित हुआ। उसने दोनों प्रमुख फसलों खरीफ और रबी के मौसम की विभिन्न उपजों को विवरण विस्तार से दिया है। वह यह भी बताता है कि दिल्ली के आस–पास के क्षेत्रों में दो फसले पैदा की जाती थी। इसका तात्पर्य है कि एक भूमि पर खरीफ और रबी दोनों फसलें पैदा होती थी।[1]

चौदहवीं शताब्दी के मध्य में कृषि व्यवस्था में परिवर्तन इतना आगे बढ़ गया था कि पूरी ग्रामीण आबादी को राजस्व प्रदान करने वाले शासक वर्ग के दृष्टिकोण से केवल दो वर्गो में विभाजित किया जा सकता था। किसान और जमींदार दोनों को दर्द के क्षणों में केवल दिखने में प्रजा के रूप में वर्जित किया गया है जो सेना के आतंक और खंजर का वार का सामना करने पर ही राजस्व का भुगतान करते हैं।[2] नए तरीके से कर लेने का आधार शहरों में कृषि का अधिशेष को एक बड़े हिस्से की खपत थी।[3]

कृषि परिवर्तन ने किसानों पर दबाव पर किसी भी प्रकार की छूट नहीं दी। नई भूमि–कर और किसानों के विरूद्ध था जिसने गरीब किसान की आर्थिक स्थिति को और कमजोर कर दिया। किसानों को भूमि छोड़ने की अनुमति नहीं थी और कोई भी तर्कसंगता के साथ पूछ सकता है। जैसे की चौदहवी शताब्दी में माहरू के साथ संवादाता ने किया था, कि किसान का जन्म कानूनी रूप से स्वतंत्र मानने का क्या मतलब था।[4]

अलाउद्दीन के काल में जब सरदारों की पूरी जोत का मूल्यांकन किया जाएगा तो स्वभाविक रूप से किसानों की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं रहेगी। इससे सामान्य किसान के जीवन स्तर में कमी आई।[5] अलाउद्दीन के नीतियों ने कुछ समय के लिए प्रमुखों को अलग कर दिया और प्रशासन को राज्य के एक बड़े हिस्से में किसानों के साथ सीधे संबंधों में लाया गया।[6] अलाउद्दीन के कृषि संबंधी उपायों ने स्वाभाविक रूप से अधिशेष के जो अन्य सह–साझेदारों को (मुखिया, नामित चौधरी, खोत और मुकदम) आर्थिक रूप से शक्तिहीन कर दिया। बरनी ने इसके

अपमान को बहुत संतोष के साथ इसका उल्लेख किया है।[7]

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपाय में किसान के पास जो पर्याप्त अधिशेष बचता था, आधी उपज की मांग से किसान के पास वह अधिशेष नहीं रहेगा और इस प्रकार निजी राजस्व पर प्रहार होगा।[8] बरनी दो विरोधाभाषी बयान देते हुए कहते हैं कि सुल्तान के अधिकारियों ने फसल के तुरंत बाद नकद में राजस्व कर को माँगा गया और किसानों से कहा गया कि वो अपना अनाज शहर में ले जाने वाले व्यापारियों को बेच दे और इसके लिए उन्हें मजबूर किया गया[9] और दूसरी तरफ अलाउद्दीन ने कर को वस्तु के रूप में संग्रहीत करने का आदेश दिया।[10] अलाउद्दीन खिलजी की शक्ति और कठोरता ने निश्चित रूप से उसके द्वारा उपाय किए गए कराधान प्रणाली की सफलता में योगदान दिया। यह प्रणाली पूरी तरह से नई प्रणाली नहीं थी। यह प्रणाली इससे पहले से ही कुछ क्षेत्रों में लागू था। उत्कृष्ट इस्लामीक प्रणाली के साथ इसकी आत्मीयता जहाँ कृषि अधिशेष के थोक का प्रतिनिधित्व करने वाला मुख्य कर खराज था।[11]

आरंभ में ऐसा प्रतीत होता है कि भूमि प्रचुर मात्रा में होने के बावजूद किसान जिस भूमि पर कृषि कर रहा था, उस पर भी संपत्ति के अधिकार का दावा नहीं कर सकता था, इसके साथ–साथ उसे इस बात का भी डर था कि उसकी तुलना फसल पर भी उच्च वर्गो का दावा होगा। यह फिरोजशाह तुगलक के समय के एक दिलचस्प दस्तावेज में सामने आया है।[12] बरनी का कहना है कि कर लेने की नई प्रणाली कमजोरों पर मजबूत के बोझ को रोकने के लिए बनाया गया था।[13] नए शासक गांवों से अधिक राजस्व चाहते थे, और इसलिए अलाउद्दीन ने बिचौलियों को समाप्त कर दिया जो कि किसानो के उत्पादन का आधा हिस्सा कर के रूप में लेते थे।[14]

सल्तनत शासक वर्ग के दृष्टिकोण से, ग्रामीण इलाकों में एक मध्यस्थ वर्ग का अस्तित्व भू–राजस्व के रूप में कृषि अधिशेष की एक बड़ी मात्रा अपने स्वयं के उपयोग के लिए आवश्यक था। वह वर्ग शून्य से नहीं बनाया जा सकता था। इसे पुराने अभिजात वर्ग के तत्वों को अवशोषित करना था। चौधरी इस नये उभरते वर्ग के पहले प्रतिनिधि रहें हैं।[15] ग्यासुद्दीन जब शासक बना तो पहले से ही शाही खजना लगभग रिक्त हो चुका था, तो ग्यासुद्दीन ने शासक बनते ही अर्थव्यवस्था को ठीक करने की और ध्यान दिया। खेतों को सिंचने के लिए नहरे खोदी साथ ही कृषि के सिंचाई के लिए विस्तृत रूप से नहरों का निर्माण किया, उन्होंने अकाल के अवसर पर भूमि कर की छूट देने की व्यवस्था की। कृषकों को सिंचाई सुविधाएँ प्रदान करने की अनुमति प्रदान की गई।[16] ग्यासुद्दीन तुगलक ने राज्य के राजस्व प्रशासन को पुनर्गठित किया, उन्होनें किसानों को फसल–विफलता के नवाचारों और विभाजकों से राहत दी। इस पद्धति के तहत किसानों की आजीविका बोए गए क्षेत्र पर निर्भर करती है, सैद्धांतिक रूप से वह पूरी मांग का भुगतान करने के लिए बाध्य था, भले ही फसल पूरी तरह से बर्बाद हो गई हो। लेकिन व्यवहारिक रूप से इस तरह के नियम को लागू नहीं किया जा सकता था क्योंकि जब कर बहुत ज्यादा था जैसे की मुस्लिम काल में होता था, किसान कर देने में असमर्थ होते।[17]

मोहम्मद बिन तुगलक ने अकाल के प्रभाव को कम करने के लिए अनेक उपाय किए। उसने बीज, बैल आदि के लिए किसानों को धन दिया परन्तु समस्या इतनी गम्भीर थी कि इसका प्रभाव कृषकों की आर्थिक स्थिति पर बहुत कम पड़ा। सुल्तान ने अकाल के कारण जल की अत्यधिक कमी की समस्या को कम करने के लिए कुएँ खुदवाने के आदेश दिए।[18] इब्न बतूता भी इसका उल्लेख करते हुए कहता है कि यहाँ एक बड़े पैमाने पर किसान विद्रोह हुआ था, जिसका नेतृत्व उपरी गांव के स्तर के खोत और मुकदम ने किया था। दमन के क्रूर तरीकों के बावजूद विद्रोह जारी रहा। इब्न बतूता कहता है कि कोल (अलीगढ़) के आस–पास के अधिकांश क्षेत्र में 1342 के अंत तक ग्रामीण में विद्रोहियों का प्रभाव रहा।[19] बरनी हमें मध्यकालीन अर्थव्यवस्था में एक नए संबंध से परिचित कराते हैं। भू–राजस्व और कृषि उत्पादन के बीच संबंध। भारी कर ने जैसा कि बरनी ने महसूस किया, कृषि को बहुत प्रभावित किया, लेकिन इसके विपरीत कृषि में गिरावट के कारण, भू–राजस्व में गिरावट आई। लेकिन यह एक अनिवार्य विरोधाभास था कि मुहम्मद तुगलक ने कराधान में वृद्धि करके अभूतपूर्व कृषि विद्रोह को उकसाया। कृषि को बढ़ावा देने की एक व्यवस्थित नीति तैयार करने वाला पहला शासक होना चाहिए।[20]

फिरोजशाह के द्वारा बनाई गई नहरों की लम्बाई और चौड़ाई ने नावों के उपयोग को संभव बना दिया और लोग एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए नाव का प्रयोग करने लगें। बरनी फिरोजशाह द्वारा बनाए गए नहरों के बारे में उल्लेख करते हुए कहता है कि उनके द्वारा बनाई गई नहरों से समृद्धि का एक लंबा रास्ता तय किया और उन क्षेत्रों के सामाजिक–आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया, जिस क्षेत्र में वो नहर बहती थी। बरनी कहते हैं कि फिरोजशाह द्वारा नहरों के निर्माण ने यात्रा और परिवहन की सुविधा प्रदान की। वे आगे लिखते हैं कि फिरोज शाह के शासन के दौरान एक सौ और एक सौ बीस मील लंबी नहरें गंगा और यमुना जैसे नदियों से काटकर के बनाई गई। इन नहरों ने रेगिस्तान को सींचा और उन क्षेत्रों को भी जहाँ कोई कुआँ या झील मौजुद नहीं था।[21]

भारत में कृषि से उत्पन्न होने वाले अनाजों के विषय में इब्न बतूता लिखता है कि वर्ष में खेती में खरीफ एवं रबी नाम की दो फसलें होती है। उसने अनाजों में कोदो, चीना, सावाँ, मूँग, गेहूँ, चना, मसूर, जौं, चावल इत्यादि का वर्णन किया है। उसके वर्णन से ऐसा पता चलता है कि उस समय किसान अधिकतर मोटे अनाज पैदा करते थे।[22]

जिस जगह पर जंगलों में वन के पशु प्यास के कारण मर जाते थे, पक्षी भी प्यास के कारण अपना प्राण त्याग देती थी और जिस जगह पहले विदेशी यात्री यात्रा करने के तथा मार्ग में चलने वाले लोग जो एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करते थे, जल की अभाव में वहाँ जाते नहीं थे, और अगर जाते भी थे तो जल के बर्तन अपने साथ लेके जाते थे और बहुत सारे यात्री उस जगह पर जल के ना मिलने पर मर भी जाते थे।[23] लेकिन नहरों के निर्माण ने पानी की उपलब्धता से इस समस्या का हल कर दिया। इन नहरों की वजह से चारों ओर हरे–भरे खेत और बगीचे दिखाई देने लगे, तरह–तरह के गन्ने उगाये जाने लगे, जैसे की पोंडा और काला गन्ना वहाँ उगाया गया। गन्ना नरम और रसदार होता था, इसकी त्वचा को आसानी से हटा कर इसके रस को चूसा जा सकता था और साथ तरह–तरह के फलों और फूलों का पौधा भी लगाया गया था। लेकिन पहले के लोग कहते हैं कि उनके समय में केवल खरीफ की फसल उगाई जाती थी, रबी की फसल को बोना संभव नहीं था क्योंकि रबी फसल को पर्याप्त पानी की जरूरत होती थी।[24]

नहरों की निर्माण के कारण उन क्षेत्रों में कुओं के निर्माण को आसान बना दिया क्योंकि नहरों के कारण उन क्षेत्रों का जलस्तर इतना ऊँचा उठ गया था कि पक्के कुएँ सामान्य रूप से केवल चार गज गहरे होते थे।[25] सीरत–ए–फिरोजशाही के एक गुमनाम लेखक ने वहाँ उगाए गए फलों और फूलों की एक सूची भी दी है।[26] फिरोजशाह तुगलक ने नहरों के देखभाल और सुरक्षा का ध्यान रखने के लिए वबदुजाह (Wabdujah) नामक एक अधिकारी को नियुक्त किया था। इस अधिकारी को नहरों को खोलने की योजना को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने के लिए और उनके द्वारा दी गई सेवाओं के लिए जागीरों से सम्मानित गया गया था।[27]

अफीफ ने लिखा है, ''एक गाँव भी अब उजाड़ नहीं रहा और न ही एक वर्ग गज भूमि बगैर जुती हुई रही। जीवन की आवश्यकतायें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी और फिरोज के सम्पूर्ण राज्यकाल में बिना किसी प्रयत्न के अनाज के मूल्य अलाउद्दीन के समान ही सस्ते बने रहे। समस्वह तथा खरला से लेकर कौल तक खेत लहलहाने लगे। फिरोज की नहर निर्माण नीति लाभदायक सिद्ध हुई और धीरे–धीरे कृषि योग्य भूमि से बढ़ोतरी हुई व राज्य में सब और सम्पन्नता दिखाई देने लगी। नहरों के किनारों अनेकों नई बस्तियाँ बस गई। उस समय दोआब में लगभग 52 नई आबादियाँ दिखाई देने लगी।[28]

फिरोजशाह का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उसकी नहरों के निर्माण था, जिससे पंजाब के पूर्वी भाग जहाँ फल की कमी के कारण कृषकों के लिए कुछ भी उपजाना सम्भव नहीं था, उपजाऊ बन सका। नहरों का निर्माण फिरोजशाह की राजस्व नीति का एक अंग बन गया।[29] फिरोजशाह की नहर निर्माण की नीति से कृषकों के साथ–साथ सल्तनत काल की अर्थव्यवस्था के लिए भी लाभदायक सिद्ध हुई। कृषि योग्य भूमि में विस्तार हुआ जिसके कारण कृषकों की स्थिति में सम्पन्नता दिखाई देने लगी, साथ ही राज्य की अर्थव्यवस्था को भी इससे फायदा हुआ।[30] सुल्तान फिरोजशाह के सिंचाई व्यवस्था के कारण जिस भू–भाग में कृषि होती थी अब वहाँ के किसान समृद्ध

हो जाएगें और मुक्तों को ग्रामों में आबाद होने के कारण खराज और कर अच्छे से प्राप्त होगें। कर अच्छे से प्राप्त होने के कारण इनको सुशासन में सुविधा होगी।[31]

फिरोजशाह तुगलक ने किसी भी प्रकार की आपातकालीन स्थिति से दिल्ली को सुरक्षित रखने के लिए नहर निर्माण के द्वारा कृषि व्यवस्था में सुधार कर धन जुटाया। फिरोज के इसी नीति के अन्तर्गत दिल्ली के आस–पास लगभग 1200 फलों के बाड़े लगवाये गये जिससे दिल्ली को राजस्व के रूप में प्रति वर्ष 1 लाख 80 हजार टका तक प्राप्त होता था।[32] सिंचाई सुविधाओं के कारण गन्ना और गेहूँ जैसी रबी (जाड़े की फसलों) के फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई। "तुर्की" विजेताओं के साथ गन्ने से शराब बनाने की विधि भी लोकप्रिय हो गया था। बर्नी के अनुसार दिल्ली के आस–पास के ग्रामीण क्षेत्र में शराब निर्माण एक उद्योग के रूप में विकसित हो गया था।[33] नील का उत्पादन भी इस समय काफी बढ़ गया था, इसका प्रमाण हमें इस बात मिलता है कि इस समय काफी मात्रा में नील का निर्यात ईरान के लिए होता था। मोहम्मद तुगलक ने किसानों को सलाह देता था कि वह अपने फसलों के उत्पादन में सुधार करें और गेहूँ की जगह गन्ना और गन्ने की जगह अंगूर बोये।[34] फिरोजशाह तुगलक के समय में नहरों के निर्माण और नहरों के द्वारा सिंचाई के बाद हिसार फिरोजाबाद के समीपवर्ती क्षेत्रों में तिल, दालें, गेहूँ, गन्ने की उपज अधिक बढ़ गई थी।[35]

निष्कर्ष

मध्यकालीन कृषि का प्रमुख लक्षण था, अनुकूल भूमि, मनुष्य अनुपात, चारागाह और पशु जनसंख्या भूमि प्रचुर मात्रा में 'उपलब्ध थी फिर भी बड़ी संख्या में भूमिहीन मजदूर थे, परंतु वे तत्कालिक सामाजिक संरचना में परम्पराओं और भू–स्वामियों की शक्ति तले दबे थे। इस काल में मुख्य रूप से व्यापक बन निर्मूलन सिंचाई की नई तकनीकों, खासकर फारसी रहट और नहरों आदि के कारण कृषि का बड़े पैमाने पर विस्तार हुआ। अकालों की बारंबारता ने कृषि को प्रभावित किया। यह न सिर्फ बड़े पैमाने पर प्रवास का कारण कृषि जनसंख्या के विस्थापन के रूप में भी परिणित होता था, बल्कि यह कभी–कभी उत्पादन प्रक्रिया को प्रभावित करता था। पूरी उत्पादन प्रक्रिया में राज्य की भूमिका विशेष रूप से 'केन्द्रीभूत' थी। एक ओर राज्य ने प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए किसानों की हर संभव सहायता की तो दूसरी ओर, राज्य ने कुछ हद तक उत्पादन पर एकाधिकार स्थापित करने का प्रयास किया।

संदर्भ सूची

1. पारूथी आर. के., *''सल्तनतकालीन भारत का आर्थिक इतिहास''* अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, 2005, पृष्ठ सं0–92।
2. मोरलैंड डब्ल्यू0 एच0, *''अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इण्डिया''*, कैंब्रिज, 1929, पृष्ठ–18।
3. हबीब इरफान, *''इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ द दिल्ली सल्तनत एन एस्से इन इटरपप्रिटेशन''* इंडियन हिस्ट्री रिव्यू, 1978, पृ0–296।
4. वही, पृ0 297–298।
5. मोरलैंड डब्ल्यू0 एच0, *''अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इण्डिया'',* कैंब्रिज, 1929, पृष्ठ–33।
6. वही पृष्ठ–34।
7. हबीब इरफान, *''इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ द दिल्ली सल्तनत एन एस्से इन इटरपप्रिटेशन''* इंडियन हिस्ट्री रिव्यू, 1978, पृ0 296
8. मोरलैंड डब्ल्यू0 एच0, *''अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इण्डिया'',* कैंब्रिज, 1929, पृ0– 33।
9. हबीब इरफान, *''इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ द दिल्ली सल्तनत एन एस्से इन इटरपप्रिटेशन''* इंडियन हिस्ट्री रिव्यू, 1978, पृ0–296।
10. वही, पृ0–296।
11. धर्मा कुमार एण्ड चौधरी तपन रॉय, *''द कैंब्रिज इकानोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया,* 1200–1750, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982, पृ0– 62।

12. वही, पृ0– 54।
13. वही पृ0– 62।
14. हबीब इरफान, *''इकनोमिक हिस्ट्री ऑफ द दिल्ली सल्तनत एन एस्से इन इटरपप्रिटेशन''* इंडियन हिस्ट्री रिव्यू, 1978, पृ0–288,
15. धर्मा कुमार एण्ड चौधरी तपन रॉय, *''द कैंब्रिज इकानोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया'',* 1200–1750, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982, पृ0– 57।
16. खन्ना कैलाश, *''मध्यकालीन भारत का इतिहास'',* अर्नुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0–152–153।
17. मोरलैंड डब्ल्यू0 एच0, *''अग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुस्लिम इण्डिया'',* कैंब्रिज, 1929, पृष्ठ–40।
18. सक्सेना आर0 के0, *''सल्तनकालीन शासन प्रणाली'',* पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1989, पृ0–133।
19. बतूता इब्न, रिहला, अनु, *मेंहदी हुसैन ओरिएण्टल,* इस्टिट्यूट पब्लिर्शस, 1976, पृष्ठ– (Text) 532 अनु. 153–7।
20. धर्मा कुमार एण्ड चौधरी तपन रॉय, *''द कैंब्रिज इकानोमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया'',* 1200–1750, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982, पृ0–64–65।
21. सिद्दीकी इक्तिदार हुसैन, ''वाटर वर्क एण्ड इरीगेशन सिस्टम इन इंडिया डूरिंग प्रि मुगल टाईमस'', *जर्नल ऑफ द इकनोमिक एण्ड सोशन हिस्ट्री ऑफ द ओरियन्ट,–* XXIX पृ0– 72
22. श्रीवास्तव हरी शंकर, *''मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन''* (1200–1445), वाणी प्रकाशन, 1997 पृ0– 158
23. रिजवी सैयद अतहर अब्बास, *''तुगलक कालीन भारत'',* भाग–1, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ–27
24. सिद्दीकी इक्तिदार हुसैन, ''वाटर वर्क एण्ड इरीगेशन सिस्टम इन इंडिया डूरिंग प्रि मुगल टाईमस'', *जर्नल ऑफ द इकनोमिक एण्ड सोशन हिस्ट्री ऑफ द ओरियन्ट,–* XXIX पृ0– 75।
25. वही, पृ0– 75।
26. वही, पृ0– 75।
27. जौहरी आर. सी., *''फिरोज तुगलक (1351–1388 ई.)'',* शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी पब्लिशर्स, आगरा 1968, पृ–104
28. सक्सेना आर. के., *''सल्तनतकालीन शासन प्रणाली''*, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1989, पृष्ठ– 136।
29. वही, पृ0– 137।
30. वही, पृ0–137।
31. रिजवी सैयद अतहर अब्बास, *''तुगलक कालीन भारत'',* भाग–1, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, 2008, पृष्ठ– 28।
32. सक्सेना आर0के0, *''सल्तनतकालीन शासन प्रणाली'',* पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1989, पृष्ठ– 137।
33. पारूथी आर0 के0, *''सल्तनतकालीन भारत का आर्थिक इतिहास''* अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, 2005, पृ0–93।
34. वही, पृ0–93।
35. गुप्ता मानिक लाल, *''मध्यकालीन भारत का इतिहास'',* एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, 2002, पृ0–100।

****